ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को
मिलन पर्व – होली
की
हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष 42, अंक 16 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 4 मार्च, 2019 से रविवार 10 मार्च, 2019
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में दिल्ली की आर्यसमाजों एव आर्य संस्थाओं की ओर से

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 195वां जन्मोत्सव समारोह सम्पन्न

पश्चिम दिल्ली में दशहरा मैदान सी-4जी पार्क जनकपुरी में भजन संध्या एवं प्रेरक मार्गदर्शन

एवम्

पूर्वी दिल्ली में महर्षि दयानन्द गौसम्वर्धन केन्द्र गाजीपुर में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव कार्यक्रम सम्पन्न

महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करना हम सबकी जिम्मेदारी – डॉ. सत्यपाल सिंह, राज्यमन्त्री

सरकारी समारोह में जनता के धन से मांसाहार न परोसे जाने के लिए संसद में प्राइवेट बिल प्रस्तुत : आर्यसमाजें, आर्य संस्थाएं एवं आर्यजन हस्ताक्षर अभियान चलाकर करें बिल का समर्थन – श्री प्रवेश वर्मा, सांसद

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं के सहयोग से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज पंखा रोड सी ब्लाक जनकपुरी के संयुक्त तत्त्वावधान में पश्चिम दिल्ली क्षेत्र में आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरवस्ती जी के 195वें जन्मोत्सव पर भव्य भजन संध्या एवं प्रेरक मार्गदर्शन कार्यक्रम 28 फरवरी को दशहरा ग्राउंड, सी-4जी पार्क, जनकपुरी में सायं 3 से 7 बजे तक आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य डॉ. प्रणव देव आर्य जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ के साथ हुआ जिसमें यजमान के रूप में सर्वश्री राहुल शर्मा, ओमपाल सिंह, राजकमल जैन व प्रकाश आर्य जी सपत्नीक उपस्थित हुए।

समारोह की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री धर्मपाल जी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पश्चिम दिल्ली क्षेत्र से सांसद श्री प्रवेश साहिब सिंह वर्मा, पदम्भूषण महाशय ध र्मपाल जी एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व महापौर श्री पृथ्वीराज साहनी, पूर्व निगम पार्षद श्रीमती रजनी ममतानी व पार्षद श्रीमती वीणा शर्मा उपस्थित थीं।

दिल्ली की आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं ने सार्वजनिक रूप से यज्ञ, साहित्य वितरण, भण्डारा, ऋषि लंगर, शोभायात्रा, भजन संध्या/काव्य संध्या, शुभकामना बैनर आदि लगाकर सैंकड़ों स्थानों पर मनाया जन्मदिवस
(विभिन्न आयोजनों की चित्रमय झांकियां अगले अंक में)

मुख्य अतिथि श्री प्रवेश साहिब सिंह वर्मा जी का सम्मान करते हुए सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने उनके द्वारा भारतीय संसद में प्रस्तुत किए गए शाकाहार बिल जोकि उन द्वारा प्राइवेट बिल के रूप में प्रस्तुत किया गया, का परिचय दिया तथा इसके समर्थन में आर्यसमाज की ओर से हस्ताक्षर अभियान चलाकर एक लाख हस्ताक्षर प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी को सौंपने का प्रस्ताव रखा, जिससे श्री वर्मा ने विस्तारित करते हुए कहा कि एक लाख तो मैं ही करा दूंगा आप कम से कम 10 लाख हस्ताक्षरों का लक्ष्य रखें।

उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्मजयन्ती समारोह को को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार की ओर से विशेष बजट के साथ आयोजित करने के आर्यसमाज के प्रस्ताव का अनुमोदन किया तथा आयोजन समिति में सम्मिलित करने का भी निवेदन किया।

उन्होनें आगे कहा मैं कोई राजनेता नहीं आर्यसमाज का सेवक हूं, सेवा एवं संस्कार

– शेष पृष्ठ 5 एवं 7 पर

पश्चिम दिल्ली के दशहरा ग्राउंड, सी-4जी पार्क जनकपुरी में 195वें महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव समारोह के अवसर पर भजन प्रस्तुत करते श्री अंकित उपाध्याय एवं साथी। आर्य वीरांगना दल जनकपुरी की प्रस्तुति। मुख्य अतिथि श्री प्रवेश साहिब सिंह वर्मा का सम्मान। वयोवृद्ध आर्यनेता श्री सोमदत्त महाजन जी का सम्मान। न्यायिक सेवा परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर सुश्री मेधा आर्या जी का सम्मान एवं उपस्थित आर्यजनों से भरा जनकपरी का दशहरा मैदान।

वेद-स्वाध्याय

श्रद्धा की महती महिमा

श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।
श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि।। ऋग्वेद 1/151/1
ऋषिः **श्रद्धा कामायनी।।** देवता - **श्रद्धा।।** छन्दः **अनुष्टुप्।।**

शब्दार्थ - श्रद्धया =श्रद्धा से अग्निः = **अग्नि समिध्यते** = प्रदीप्त होती है और **श्रद्धया** = श्रद्धा से ही **हविः हूयते** = हवि दी जाती है, आत्मबलिदान किया जाता है। **भगस्य** = सब भजनीय वस्तु के, भागधेय धर्म के, ऐश्वर्य के **मूर्धनि** = मूर्धा-स्थान में **श्रद्धाम्** = श्रद्धा को हम लोग **वचसा** = वाणी द्वारा, वेदवाणी द्वारा **वेदयामसि** = घोषित करते हैं, प्रकट करते हैं।

विनय - संसार की कोई भी अग्नि श्रद्धा के बिना प्रदीप्त नहीं होती और कोई भी बलिदान, श्रद्धा के बिना किया नहीं जा सकता। किसी भी प्रकार की सफलता पाने के लिए त्याग करना और अग्नि प्रदीप्त करना आवश्यक होते हैं। हम किसी भी दिशा में उन्नति करना चाहें, हमें सदा एक तो आत्मबलिदान के लिए तैयार होना चाहिए और दूसरे, यह बलिदान जिस उच्च ध्येय के लिए करना होता है उस ध्येय की पवित्र अग्नि हममें धधकनी चाहिए, पर ये दोनों ही कार्य-अग्निदीपन और आत्म-बलिदान-बिना श्रद्धा के कभी नहीं बन सकते, अतः संसार के सब धीर पुरुष राष्ट्राग्नि, संग्रामाग्नि, धर्माग्नि, ज्ञानाग्नि, आत्माग्नि आदि नाना अग्नियों को किसी उच्च भावना से प्रेरित होकर अपने अटूट विश्वास द्वारा नित्य प्रदीप्त कर रहे हैं और उसमें अटल श्रद्धा से अपना सर्वस्व तक स्वाहा करते हुए अग्रसर हो रहे हैं। क्या तुम समझते हो कि वह यज्ञवेदि की भौतिक स्थूल अग्नि भी बिना श्रद्धा के ही समिद्ध होती है? अग्निहोत्र का रहस्य जाननेवाले तो देखते हैं कि भक्त, अग्निहोत्री लोग, जो अग्नि प्रदीप्त करते हैं वे अपनी अन्दर की श्रद्धा को ही उस अग्नि में प्रदीप्त करते हैं। बाहर की अग्नि जलाना निरर्थक है, उससे अग्निहोत्र का कोई फल नहीं मिल सकता, जबतक कि अन्दर की श्रद्धाग्नि न जल रही हो। वास्तव में कोई भी यज्ञ, कोई भी अग्निदीपन और आत्मत्याग, कोई भी उन्नतिकारक कार्य बिना श्रद्धा के नहीं चल सकता। इसीलिए हम चिल्लाते हैं-'श्रद्धा को अपनाओ, श्रद्धामय पुरुष बनो!' हे मनुष्यो! अपना एक भी काम श्रद्धारहित होकर मत करो! श्रद्धा के बिना कभी कुछ सध नहीं सकता। तुम्हारे सब कर्त्तव्यों की सफलता, तुम्हारे धर्म के सब शास्त्रोक्त विधि-निषेध श्रद्धा पर ही अवलम्बित हैं। हम तो वेदवाणी का नाम लेकर घोषित करते हैं, अपनी वाणी से पुकारते हैं, अनुभव करते हुए सब भाइयों से निवेदन करते हैं कि भजनीय=सेवनीय धम-शरीर की मूर्धा श्रद्धा है। श्रद्धा-बिना सब धर्म निर्जीव हैं। हे भाइयो! सब करना-धरना बेकार है, सब जीवन मृतक-समान है, जबतक कि इसमें श्रद्धा का प्राण मौजूद नहीं है।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

पुलवामा आतंकी हमले के बाद भारत सरकार का कदम

जमात-ए-इस्लामी पर प्रतिबन्ध कितना जरुरी?

.....जमात-ए-इस्लामी पर यह कोई पहला प्रतिबंध नहीं है इससे पहले इस संगठन पर उसकी गतिविधियों को लेकर अतीत में दो बार प्रतिबंध लग चूका है। पहली बार 1975 में जम्मू-कश्मीर सरकार ने दो साल के लिए और दूसरी बार अप्रैल 1990 में केंद्र सरकार ने तीन साल के लिए प्रतिबंध लगाया था। इसमें सबसे बड़ी बात यह है कि जिस संगठन के पक्ष में आज महबूबा उतरी है उन्हें यह पता होना चाहिए कि दूसरी बार प्रतिबंध लगने के समय उनके पिता मुफ्ती मोहम्मद सईद देश के गृहमन्त्री थे।.....

कई रोज पहले जम्मू कश्मीर में जमात-ए-इस्लामी संस्था पर लगे प्रतिबंध के बाद अनेकों सवाल और जवाब के बुलबुले लगातार फूट रहे है। एक तरफ जहाँ जमात-ए-इस्लामी का दावा है कि उनके स्कूल में बच्चों को नैतिक और धार्मिक शिक्षा के अलावा आधुनिक पढ़ाई दी जाती है, वहीं जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल का मानना है कि दुनिया भर में जमात ए इस्लामी जैसी संस्थाएं ही शिक्षा और लोगों की मदद करने जैसे काम की आड़ में आतंक की फंडिंग, उसको बढ़ाने और कट्टरता बढ़ाने का कार्य करती हैं। कश्मीर में भी मदरसों के माध्यम से जमात बड़े पैमाने पर कट्टरता फैला रहा हैं। इस कारण जमात के कई बड़े नेताओं को हिरासत में लिया गया, छापेमारी के दौरान करीब 52 करोड़ जब्त भी किये गये। अकेले श्रीनगर में संगठन के 70 बैंक खातों को सील कर दिया गया है। श्रीनगर के बाद किश्तवाड़ में भी जमात-ए-इस्लामी के बड़े नेताओं को गिरफ्तार किया गया है।

यह मामला ऐसे समय उभरकर आया है जब देश में चुनाव निकट है। इस कारण इस पर राजनीति न हो इसे भी नकारा नहीं किया जा सकता। जमात-ए-इस्लामी संगठन पर प्रतिबंध के बाद जम्मू कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती विरोध के लिए सड़कों पर उतरी और केंद्र की सरकार को निशाने पर लेते हुए कहा हम ऐसा नहीं होने देंगे और इसके गंभीर परिणाम भुगतने तक की धमकी दे डाली। जबकि जमात-ए-इस्लामी पर यह कोई पहला प्रतिबंध नहीं है। इससे पहले इस संगठन पर उसकी गतिविधियों को लेकर अतीत में दो बार प्रतिबंध लग चूका है। पहली बार 1975 में जम्मू-कश्मीर सरकार ने दो साल के लिए और दूसरी बार अप्रैल 1990 में केंद्र सरकार ने तीन साल के लिए प्रतिबंध लगाया था। इसमें सबसे बड़ी बात यह है कि जिस संगठन के पक्ष में आज महबूबा उतरी है उन्हें यह पता होना चाहिए कि दूसरी बार प्रतिबंध लगने के समय उनके पिता मुफ्ती मोहम्मद सईद देश के गृह मंत्री थे।

इस्लामी धर्मगुरु मौलाना अबुल अला मौदुदी द्वारा स्थापित, इस्लाम की विचारधारा को फैलाने के उद्देश्य से साल 1941 में बनाए गये इस संगठन के पास आज करीब 4,500 करोड़ रुपये की संपत्ति होने की संभावना जताई जा रही है। माना जाता है जमात-ए-इस्लामी काफी लंबे समय से कश्मीर को पाकिस्तान में मिलाने की मुहिम भी चला रहा है। उसका मानना है कि कश्मीर का विकास भारत के साथ रहकर नहीं हो सकता है। यह भी सुनने में आता है कि घाटी में कार्यरत कई आतंकी संगठन जमात के इन मदरसों और मस्जिदों में पनाह लेते रहे हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि जो घाटी आज सुलग रही है उसमें कहीं न कहीं कश्मीर में कार्य करने वाले मजहबी संगठन शामिल न हो क्या ऐसा माना जा सकता है? आखिर पत्थरबाजों को मिलने वाला पैसा कहाँ से आता है? उसका माध्यम क्या है? यह सवाल इस प्रतिबंध को मजबूत करते है। हालाँकि प्रदर्शन और पत्थरबाजी में आनेवाली भीड़ को छोड़ दें तो घाटी में एक बड़ा तबका है जो ये हिंसा नहीं चाहता किन्तु वह मजबूर है और मजबूरी का कारण यह कि मस्जिदों से आजादी के तराने बजते ही भीड़ घरों से बाहर निकलने लगती है। इस्लाम के नाम पर भड़कानेवाले भाषण होते हैं, लोगों को भय दिखाकर आंदोलन से जुड़ने पर मजबूर किया जाता रहा है। जबकि कश्मीरी जानते हैं कि पाकिस्तान के साथ जाने में उनका कोई हित नहीं है लेकिन पर्दे के पीछे छिपे जमात-ए-इस्लामी और इसने सहायता प्राप्त आतंकी संगठनों के डर वे हर वह काम करते हैं जो देशहित में नहीं होता।

बताया जाता है कि यह आतंकी संगठन हिजबुल मुजाहिदीन का राजनीतिक चेहरा है। जमात-ए-इस्लामी जम्मू कश्मीर ने ही हिजबुल मुजाहिदीन को खड़ा किया है और उसे हर तरह की मदद करता है। जमात-ए-इस्लामी आतंकियों को प्रशिक्षण, वित्तीय मदद, शरण देना और हर संसाधन मुहैया कराता है। इसे कई आतंकी घटनाओं के लिए जिम्मेदार माना जाता है। यह एक ऐसा सत्य है जिसे आज आम कश्मीरी को स्वीकार लेना चाहिए उसे मजहब से ऊपर उठकर अपने भविष्य के बारे में सोचना चाहिए।

क्योंकि पाकिस्तान की शुरू से ही कोशिश रही है कि वह इस राज्य की मुस्लिम बहुल जनता और मजहब के बूते इस राज्य पर कब्जा करे। पाकिस्तान की इस कश्मीर हड़प नीति को जमात-ए-इस्लामी कश्मीर जैसे संगठन अंदरूनी तौर पर मजबूती प्रदान कर देश में राष्ट्र विरोधी और विध्वंसकारी गतिविधियों में शामिल होने से नहीं चूक रहे हैं। आतंक को व्यापार बना कर ये ताकतें धरती के इस स्वर्ग को नरक में तब्दील करने पर आमादा हैं।

पाकिस्तान सहित कई देशों से पैसा लेकर जमात जैसे संगठन यही चाहते हैं कि कश्मीरी नागरिकों को अलग-थलग करके उनकी लोकतान्त्रिक प्रणाली को खत्म कर दिया जाये। यह सब बहुत उलझे हुए प्रश्न हैं जिनका उत्तर आनन-फानन कार्रवाईयों से नहीं मिल सकता है बल्कि एक लम्बी नीति बना कर ही मिल सकता है। यह एक कटु सत्य है कि घाटी में आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ाने में पड़ोसी पाकिस्तान लगातार लगा हुआ है। मगर किसी भी नजरिये से कश्मीर की समस्या का कोई धार्मिक पक्ष नहीं होना चाहिए। यदि हिन्दू-मुसलमान के आधार पर जमात-ए-इस्लामी संस्था पर लगे इस प्रतिबंध को देखा गया तो यह पाकिस्तान के नजरिये का ही समर्थन करना होगा। - ***सम्पादक***

समसामयिक लेख

देश में क्यों बढ़ रही है आत्महत्या ?

बड़ा आसान है न खुद को मिटाना खुद पर तेल छिड़ककर आग लगा लो, छत से कूद जाओ या फिर पंखे में रस्सी डालकर लटक जाओ, इतना नहीं हो सकता तो ट्रेन की पटरी पर चले जाओ, ब्लेड से नस काट लो। न जाने कितने तरीके हैं जीवन खत्म करने के। घर में जरा सी बात हुई या अपनी पसंद का काम न हुआ तो चलो आत्महत्या कर लो, पत्नी नाराज है या पति से कहासुनी हो गयी चलो आत्महत्या कर लो। जैसे जिन्दगी, जिन्दगी न होकर कोई मजाक हो, हर बात में आत्महत्या ये आज के भारत की कहानी हो गयी।

कई रोज पहले घटना का जिक्र करें तो बांदा जिले की बबेरू कोतवाली के पतवन गांव में 22 फरवरी की रात 28 साल के विकास ने आत्महत्या कर ली। विकास की शादी 21 फरवरी को हुई थी। विकास का शव तो पोस्टमॉर्टम के लिए चला गया लेकिन सवाल घर और समाज में जरुर चीख रहे है कि आखिर ऐसा क्या कारण हुआ जो पहले दिन शादी के सात फेरों पर सात जन्मों के बंधन और रिश्ते को निभाने की शपथ लेकर विकास ने अगली ही रात खुद को मिटा डाला।

वैसे देखें तो हर रोज अखबारों और न्यूज चैनलों में ऐसी खबरें आम होती हैं कि शादी का प्रस्ताव ठुकराए जाने से आहत एक प्रेमी ने खुदकुशी कर ली, शादी के बाद महिला ने आग लगाकर आत्महत्या कर ली या शादी के बाद युवक ने जहर खाकर जान दी और प्रेम प्रसंग के चलते नव विवाहिता ने पंखे से लटककर जान दी। 23 मई 2018 की बात है साउथ द्वारका में शादी के पंद्रह दिन बाद ही आपसी झगड़े में पत्नी ने चुन्नी से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। झगड़े की वजह मामूली कहासुनी थी। 18 जुलाई 2018 को तमिल फिल्म इंडस्ट्री की जानी मानी एक्ट्रेस प्रियंका ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। प्रियंका ने अपने सुसाइड नोट में घरेलू कलह इसकी वजह लिखी थी।

......कहते हैं आत्म हत्या करने वाले बेहद दुखी और लाचार होते हैं जिसका दर्द सिर्फ उसे करने वाला ही जानता है, पर क्या आत्महत्या उस दर्द को खत्म कर देती है? लेकिन ये सच नहीं है असल में वह आत्महत्या का दर्द किसी और को दे देती है। गुस्सा, मजबूरी, नासमझी या फिर सोच समझकर की गई आत्महत्या का हश्र सिर्फ दुख ही होता है जो मरने वालों के अपनों को हमेशा के लिए मिल जाता है। जाहिर है, मौजूदा व्यवस्था में विरोध की सामूहिक अभिव्यक्तियों के दायरे जितने संकुचित होते जाएंगे, अपराध और आत्महत्याओं में उतनी ही बढ़ोतरी की आशंका बनी रहेगी।..........

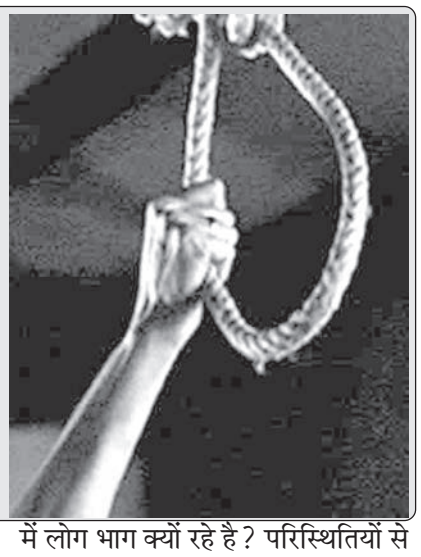

आत्महत्या के आंकड़ें दर्शाती पिछले वर्ष जारी एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि भारत में आत्महत्या करने वालों में किसान नहीं बल्कि सबसे ज्यादा युवा हैं। हमारे देश में हर साल करीब एक लाख लोग आत्महत्या करते हैं। 1994 में जहां 89195 आत्महत्याओं के मामले रिकार्ड किए गए, वहे 2004 में 113697 हो गए और 10 साल बाद यानि 2014 में कुल 131666 मामले सामने आए। नेशनल हेल्थ प्रोफाइल की इस रिपोर्ट के अनुसार आत्महत्या की घटनाओं में 15 साल में 23 प्रतिशत का इजाफा हुआ। साल 2015 में एक लाख 33 हजार से ज्यादा लोगों ने आत्महत्या की जबकि 2000 में ये आंकड़ा एक लाख आठ हजार के करीब था।

आत्महत्या करने वालों में 33 प्रतिशत की उम्र 30 से 45 साल के बीच थी, जबकि आत्महत्या करने वाले करीब 32 प्रतिशत लोगों की उम्र 18 साल से 30 साल के बीच थी।

अब सवाल यह उठता है कि आखिर क्या कारण कि जीवन से इतनी बड़ी संख्या में लोग भाग क्यों रहे है? परिस्थितियों से जूझने का जज्बा समाप्त हो गया या रिश्तों की जिम्मेदारी से भाग रहे है या फिर अपरिपक्वता के कारण आज का युवा आत्महत्या को ही एक बेहतर विकल्प समझने लगा है। विवाह के उपरांत हुई आत्महत्याओं में अनेकों कारण ये पाए जाते कि लड़की या लड़के के विवाह से पहले प्रेम सम्बन्ध होते है पर विवाह परिवारजनों की इच्छा से होता है पारिवारिक दबाव में हुई शादियाँ भी कई बार आत्महत्या का कारण बन जाती है।

इसके अलावा आधुनिक जीवनशैली और दौड़-भाग भरी जिंदगी के कारण बढ़ता तनाव, पारिवारिक उलझनें आर्थिक कारण जैसी अनेकों परेशानी कई बार सामने आ जाती है। पहले बड़े परिवारों में ऐसी परेशानियों का मिलकर सामना किया जाता था लेकिन आज परिवार छोटे हो गए। कई बार तनाव के समय मानसिक सहारा नहीं मिल पाता तो इससे बचने के लिए जेहन में आत्महत्या का ख्याल आता है। उन्हें ये एहसास होने लगता है कि अब बस बहुत हो गया और खुद को खत्म कर लेते हैं।

इसका एक बहुत ही आसान उदाहरण हम विद्यार्थियों में पाते हैं। जब कड़ी मेहनत के बाद भी वे परीक्षा में फेल या फिर उनके नंबर काफी कम आते हैं तो उन्हें यह एक बड़ी गलती लगने लगती है। तब उन्हें पल-पल अपनी गलती का डर सताता है। बाद में यही डर बढ़ता हुआ उन्हें आत्महत्या की ओर ले जाता है। जबकि उन्हें समझना होगा कि गलती सुधारी जा सकती है, लेकिन एक बार उनकी जिंदगी खत्म हुई तो वह वापस नहीं आएगी।

अपमान एक ऐसा शब्द है जिसे कई लोग बेहद गंभीरता से लेते हैं, उनका अंतर्मन टूट जाता है। वह काफी उदास हो जाते हैं, उन्हें दुनिया के सामने जाने से भी शर्म आने लगती है इस कारण से भी यह कदम उठा लेते हैं।

भावनाओं के चलते आत्महत्या का फैसला लेते हैं, शारीरिक शोषण की तरह ही किसी की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना, आत्महत्या का एक बड़ा कारण बन जाता है। इसके अलावा पिछले दिनों एक बच्चे ने इस कारण खुदकुशी की क्योंकि उसके माता-पिता उसे समय नहीं देते थे। एक दूसरी घटना में एक मां और बेटी ने आत्महत्या इस वजह कर ली क्योंकि शहर के एक दबंग ने बेटी को उठाने की धमकी दी थी। और भी न जाने कितने ऐसे कारण जो हम सबके सामने एक सवाल छोड़ जाते हैं। कहते हैं आत्म हत्या करने वाले बेहद दुखी और लाचार होते हैं जिसका दर्द सिर्फ उसे करने वाला ही जानता है, पर क्या आत्महत्या उस दर्द को खत्म कर देती है? लेकिन यह सच नहीं है असल में वो आत्महत्या दर्द किसी और को दे देती है। गुस्सा, मजबूरी, नासमझी या फिर सोच समझकर की गई आत्महत्या का हश्र सिर्फ दुख ही होता है जो मरने वालों के अपनों को हमेशा के लिए मिल जाता है। जाहिर है, मौजूदा व्यवस्था में विरोध की सामूहिक अभिव्यक्तियों के दायरे जितने संकुचित होते जाएंगे, अपराध और आत्महत्याओं में उतनी ही बढ़ोतरी की आशंका बनी रहेगी।

- राजीव चौधरी

क्रान्तिकारियों की कथा

गिरफ्तारी दो खतरनाक क्रान्तिकारियों की

प्रशिक्षण के बाद दिसम्बर 1939 में मेरी पहली नियुक्ति हुई संयुक्त प्रान्त गुप्तचर विभाग की स्पेशल ब्रांच (राजनीतिक) में ख़ान बहादुर मोहम्मद नासिर खां के अधीन। उस ज़माने में तीन ही तो अफ़सर थे चोटी के राय बहादुर पं. शम्भूनाथ, एम.बी.ई. (मेम्बर ऑफ़ ब्रिटिश एम्पायर), राय बहादुर टीकाराम, एम. वी. ई. और ख़ान बहादुर मोहम्मद नासिर खां, जो सारे सूबे में छाए हुए थे। चप्पे-चप्पे पर उनके मुख़बिरों का जाल बिछा था। समस्त प्रान्त की राजनीतिक हलचल उनकी ज़बान पर थी। मजाल है जो पत्ता खड़के और उन्हें आभास न हो! यू.पी. में क्रान्तिकारी, समाजवादी और साम्यवादी आन्दोलनों को कुचलने का श्रेय अंग्रेज अफ़सर इन्हीं तीनों को समान रूप से देते थे। उन्हीं दिनों की घटना है:

लखनऊ में अमीनाबाद के निकट ग्विन रोड पर एक वैष्णव भोजनालय था-महावीर होटल, जो आज भी क़ायम है। सन् 1930 से 1942 तक इसके मालिक राम प्रसाद मिश्र ने क्रान्तिकारियों का बड़ा साथ दिया था। ऊपर से तो मिश्र जी घोर अहिंसाबादी कांग्रेसी बनते थे, लेकिन थे वे वास्तव में क्रांतिकारियों के प्रबल समर्थक। हम लोगों की नज़र में उनका होटल फ़रारों का अड्डा समझा जाता था। मुश्किल थी तो बस यही कि कई मर्तबा तलाशी लेने के बावजूद किसी मफ़रूर की वहां गिरफ़्तारी न हो सकी। सी.आई. डी., स्पेशल ब्रांच का अंग्रेज़ सुपरिंटेंडेंट ऑफ़ पुलिस जॉर्ज डि' वैरो पार्किन तिलमिलाकर रह जाता था।

- क्रमशः

- धर्मेन्द्र गौड़ : साभार :
क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

मृत्योर्मा अमृतं गमय – Lead us from death to liberation

Humble tributes to Pandit Ramlall Ji

The soul of Legendary Arya leader, founder of many Arya/Vedic organizations, renowned Vedic Preacher and missionary, author of many books, Pandit Ramlall Dharmacharya has passed on. Pandit ji was 91. His Antyeshti Sanskar had been taken place on Thursday, Jan 31st, 2019 at 11.30 AM at All Souls Crematory (7202 Astoria Boulevard South, East Elmhurst, NY).

Pandit Ramlall was a fearless leader with strong principles yet very pleasant to all. He was gifted with numerous skills and excelled in whatever roles he undertook. He travelled to many countries for his mission to serve Arya Samaj and left a strong impact of his commitment, dedication, relentless efforts for the cause of making the universe noble.

Panditji came from very humble beginnings as he lost his father at age four and mother by age seven and was taken care of by his chacha (paternal uncle) Goberdhan who brought him up in a Hindi-speaking home. He worked hard since his younger age to earn his livelihood. All of this notwithstanding, Pandit Ramlall continued to dedicate his life to his community and to the propagation of his Vedic beliefs. He was the founder of the Arya Spiritual Center.

The esteem in which Pandit Ramlall is held is not restricted to New York/North America but transcends national boundaries. His work of preaching and teaching took him to several parts of the world where he was equally welcomed. In addition to his native Guyana, he frequently visited Suriname, Holland, India, South Africa, Mauritius, the Caribbean, Canada and states across the USA where he was well received and admired. Being fluent in Hindi and English, his versatility allowed him to communicate with ease with the Hindi and English speaking communities wherever he went.

Pandit Ramlall was also involved in the political struggle for independence for his country, Guyana and suffered the fate of being incarcerated along with others at the Sibley Hall prisons in Mazaruni, as a political prisoner in 1964. While there, he taught other inmates Hindi and Vedic philosophy. He was released in 1966 when the country gained independence and a pardon was granted to the prisoners.

Before leaving Guyana, Pandit Ramlall worked closely with the Guyana Central Arya Samaj (then, the American Aryan League), headquarters of Arya Samaj in the country.

Pandit Ramlall was seen as the ambassador of Vedic Dharma/Hinduism in New York. Since arriving there in 1974 he identified himself with the Vedic-Hindu community. He was instrumental in rallying many Vedic-Hindu organizations to celebrate Holi in a big way in New York. This eventually grew into the annual Phagwah Parade, that, even now attracts people in the tens of thousands.

In 1975, he was presented with a prestigious literary award at the first Vishwa Hindi Sammelan (World Hindi Conference) in Nagpur, India, in the presence of then Prime Minister Indira Gandhi, and Dr. Sewsagar Ramgulam, Prime Minister of Mauritius. On the occasion of Dr. Shyam Sundar Das's Centenary Celebration organized by Nagri Pracharini Sabha, he was among thirty-two literary scholars presented with awards by the vice president of India, Shri B.B. Jatti.

In April 1991 Pandit Ramalall ji lead a delegation of over 30 people and traveled to Detroit for the 1st Arya Maha Sammelan in North America. This historic Sammelan was the inception of Arya Pratinidhi Sabha America. Arya veteran leaders such as Sh. Girish Khosla ji, Sh. Amar Erry ji, Sh. Anand Rupnaraine ji, Late Pandit Dharamjit Jigyasu ji, Late Dr. Inderpresuad ji, Dr. Satish Prakash ji, Pandit Bharat Singh, Behan Sati Virtual, Pt Vedabrat Etwaru among many others assembled for the unity of Arya Samaj in North America. Pandit Ramlal ji also served as the Managing President of Arya Pratinidhi Sabha America for over a decade.

The entire Arya World is saddened by his heavenly abode and prays to Almighty God to bless *सदगति* to his departed soul. Arya Pratinidhi Sabha America expresses its sincere gratitude and homage to Pandit Ramlall Ji for his selfless, exemplary missionary work, dedicated to make this universe noble. Sabha also prays to almighty God to enable his family to bear Pandit Ji's loss.

In memory of Late Dharma charya, Pandit Ramlall ji, Arya Pratinidhi Sabha America announces an annual award for recognition of an Arya Samaj organi-

zation who would be instrumental in ground breaking Ved Prachar work. Arya Pratinidhi Sabha America would seek out candidate organizations who have made significant impact locally or nationally in paving a path for spreading the Vedic Values in the community . Pandit Ramlall ji was a vanguard of building bridges across various communities with central message of unity. Organizations following these footsteps to propagate the Vedic values and the message of Maharshi Swami Dayanand Saraswati would be recognized at the annual Arya Maha Sammelan.

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मांतं शरीरम्।

ओंम क्रतो स्मर कृतं स्मर क्रतो स्मर कृतं स्मर।।

Vayur anilam amritam athedam bhasmantam shareeram.

Om krato smara kilve smara kritam smara.

- Dr. Surya Prasad Biere
(Netherlands)

प्रथम पृष्ठ का शेष

पूर्वी दिल्ली – महर्षि दयानन्द गौसम्वर्धन केन्द्र गाजीपुर में आयोजित 195वें महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव समारोह के अवसर पर भजन प्रस्तुत करते श्री श्री दिनेश पथिक जी। बच्चों की सांस्कृतिक प्रस्तुति। गौशाला की निरन्तर सेवा के लिए गौशाला प्रबन्धक श्री पृथ्वीपाल आर्य का सम्मान। गौशाला के मन्त्री श्री सुबोध कुमार जी का सम्मान। वरिष्ठ समाजसेवी एंव गौसेवक श्री जयनारायण अग्रवाल जी का सम्मान। बच्चों के लिए नैतिक शिक्षा की पुस्तक का विमोचन करते आमन्त्रित अतिथिगण। समारोह को सम्बोधित करते मुख्य अतिथि डॉ. सत्यपाल सिंह जी एवं उपस्थित आर्यजनों से भरा आयोजन स्थल।

– जारी पृष्ठ 7 पर

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं संस्थाओं की ओर से आर्य केन्दीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव समारोह सम्पन्न

आर्य समाज के जागने से ही देश आगे बढ़ेगा
–डॉ. वेद प्रताप वैदिक

राष्ट्र भक्ति में आर्य समाज का सर्वोच्च स्थान
– डॉ. योगानन्द शास्त्री

हिन्दी–हिन्दुस्तान को करें सकार : हस्ताक्षर हिन्दी में ही करने/करवाने का चलाएं अभियान

आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली द्वारा आयोजित ऋषि बोधोत्सव पर ऋषि मेले का भव्य आयोजन रामलीला मैदान के विशाल प्रागंण में हर्षोल्लास के वातावरण में सुसंपन्न हुआ। इस अवसर पर प्रात:काल आचार्य विद्या प्रसाद मिश्रा जी के ब्रह्मत्व में वृहद यज्ञ में श्रीमती रोजी जी, श्री रवि आहुजा जी, श्रीमती डॉ. कीर्ति जी, डॉ. आशीष लांबा जी, श्रीमती शारदा जी व श्री सुभाष त्यागी जी और श्रीमती वाणी जी तथा श्री विवेक अग्रवाल जी ने परिवार सहित यजमान बनकर यज्ञ की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार की छात्राओं ने वेद मंत्रों का पाठ किया। इसके उपरांत श्रीमती एवं श्री कृष्ण तनेजा जी ने ध्वजारोहण किया और ओम् का झंडा ऊचा रहे के जयघोषों से सारा वातावरण गुंजायमान हो उठा। मंच से श्री गुलशन जी के सारगर्भित मधुरभजनों से ऋषि दयानंद की महिमा और देश भक्ति का संदेश पाकर हजारों लोग झूम उठे। आर्य विद्यालयों के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक नाटकों की प्रस्तुति से महर्षि दयानंद को किस तरह शिवरात्रि पर बोध हुआ का चित्रण कर सबके भीतर ऋषि भक्ति का भाव जागृत किया। आर्य शीशुशाला, आर्य वीर मॉडल स्कूल बादली एवं महाशय धर्मपाल विद्या मंदिर के बच्चे इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित थे। श्री विजयकुमार जी ने राष्ट्र भक्ति की कविता का पाठ किया।

विशाल ऋषि मेले में आयोजित सार्वजनिक सभा की अध्यक्षता आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने की। इस अवसर पर अनेक महान प्रवक्ताओं ने अपने उद्बोधनों में शिवरात्रि से महर्षि दयानंद, आर्य समाज के गहरे संबंध को उजागर करते हुए समस्त आर्यजनों को नवजागृति का संदेश दिया। साध्वी उत्तमा यति जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि महर्षि दयानंद जी के उपकारों को याद कीजिए। आर्य समाज के सिद्धांतों को जन–जन तक पहुंचाइए। इसके लिए नारी जाति को पहले जागना होगा। नारी के जागने से ही आर्य समाज का उत्थान होगा। डॉ. योगानंद शास्त्री जी ने कहा –महर्षि की प्रेरणा से भारत की आजादी में सबसे ज्यादा आर्य समाज के लोग सम्मिलित थे। आर्य समाज सदैव राष्ट्र भक्ति में अग्रणी रहा है। स्वामी धर्मेश्वरानंद जी ने महर्षि के बनाए नियम को आधार बनाकर कहा सारे संसार का उपकार करना आर्य समाज का विशेष कर्त्तव्य है। आर्य समाज के द्वारा ही संसार का कल्याण होगा। शिवरात्रि का पर्व अद्भुत प्रेरणा का पर्व है। आर्य समाज को ऋषि बोध दिवस से प्रेरणा लेकर अपनी शक्तियों को जगाना चाहिए। डॉ. स्वामी देवव्रत जी ने कहा आर्य समाज ज्ञान से, बुद्धि से, उत्साह से अपने भीतर सोई अग्नि को जगाएं, ऊंचे उठे, आगे बढ़ें।

इस पर्व के मुख्य वक्ता डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी ने कहा–आर्यसमाज जागेगा तो देश गतिशील होगा और आर्य समाज ही देश की अखण्डता को गरिमा प्रदान कर सकता है। इसके लिए भारत को आर्यावर्त बनाने का संकल्प करें। आर्य समाजी होना अपने आपमें गर्व की बात है। अपने देश को आगे बढ़ाने के लिए शाकाहार, शराब बंदी, हिंदी भाषा का प्रचार आदि आंदोलन आर्य समाज को चलाने चाहिए। स्वामी संपूर्णानंद जी ने कहा आजादी का बिगुल बजाने वाले देश और दुनिया को सन्मार्ग दिखाने वाले ऋषि की प्रेरणा से ही भारत विश्व गुरु बनेगा।

आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने ऋषि बोध दिवस की सबको बधाई देते हुए अपने संदेश में कहा कि आर्य समाज का मूल मंत्र मानव सेवा है और हम सेवा के पथ पर निरंतर आगे बढ़ रहे हैं और आगे बढ़ते रहेंगे।

इस अवसर पर श्रीमती प्रभा आर्या जी, श्री ओमवीर आर्य जी, श्रीमती सुकृति जी, श्रीमती पुष्पलता जी, श्री जियालाल जी, आदि को विभिन्न सेवा सम्मानों से

– शेष पृष्ठ 7 पर

बोधोत्सव के अवसर पर आयोजित जन सभा को सम्बोधित करते स्वामी देवव्रत सरस्वती जी, साध्वी उत्तमायति जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी, कवि श्री विजय कुमार जी, डॉ. योगानन्द जी शास्त्री, सुमधुर भजनों की प्रस्तुति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति देते बच्चे।

आर्य श्रेष्ठी सम्मान : श्रीमती प्रभा आर्या जी को माता छाजिया देवी आर्य पुरस्कार। श्री जियालाल जी को श्री रामकृष्ण तनेजा सेवा पुरस्कार। श्रीमती पुष्पलता आर्या जी को श्री भारद्वाज स्मृति पुरस्कार एवं श्री ओमबीर सिंह जी को माता रुक्मिणी देवी स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। (नीचे) बोधोत्सव के अवसर पर उपस्थित आर्यजन।

Veda Prarthana - II
Rigveda - 29

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ
चरतः सह।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः
सहाग्निना।।

यजुर्वेद 20/25

Yatra braham cha kshatram cha samyanchau charatah saha.
Tam lokam punyam prajnesham yatra devah saha agnina.
- Yajur Veda 20/25

Learned and Brave Persons Should Work Together to Strengthen Society

- Acharya Gyaneshwarya

This mantra describes the methods by which a society and a nation can get rid of existing lack of peace, disorganization, worries among its people, prevailing fears and terrorism and replace it with peace, love, caring, trust, fearlessness, and a feeling of joy and happiness among people. The mantra advises that the society's and nation's learned and wise persons as well as rulers and administrators should work together and jointly make firm action plans and work hard to implement them. The Sanskrit word braham here means those learned persons who have commitment to truth, virtue, dhanna, duty, hard work, justice, excellence, high moral ideals, self-control, patience, good character and the ability to interact with others in a civil manner. The Sanskrit word shatra here means those persons who are physically strong, courageous, brave, valorous, powerful, wise, intelligent, just, and are able organizers, administrators, and rulers.

In societies and nations, where people with both types of above stated qualities work together with mutual trust, faith, love, and determination, then they find success in leading the nation. United together they are able to stop and uproot various types of existing vices and criminal activities in the society e.g. extreme selfishness, deception, cunning or crafty behavior, lustfulness, lechery, blind faith, fraud, gambling, bribing, theft, looting, terrifying others etc. Moreover, they gradually make their society and nation akin to living in paradise.

Persons with braham qualities and those with shatra qualities, both should be further advised and guided by a counsel of devata like persons, who also would approve various future action plans. Devata means those persons who have wisdom, can clearly differentiate right from wrong, foresee the consequences of various actions, are selfless and with the highest virtuous values (divine like qualities), are always looking for others welfare, and who give their best to society without asking anything in return.

Persons with braham and/or shatra qualities should be respected and honored by the society-at-large, especially the learned persons. The responsibilities of the braham are to set up the rules for the just governance of the society and nation. Shatra have the responsibility to implement those rules and appropriately punish those who disobey the rules so that the society can function well and a discipline maintained. Many persons in a society often want the freedom to do as they jolly well please, with disregard for the societal rules and responsibilities that are applicable to all. They feel the rules are a burden that reduce their freedom and give control to others. They use this pretext to justify their breaking the societal rules and responsibilities. If they are caught red handed breaking the rules (e.g. not stopping at a red light) or committing a crime (e.g. taking a bribe), they do not want to admit their guilt or culpability, and if forced to admit their guilt (e.g. in a court), they defmitely do not want the punishment recommended for their guilt or crime. Therefore, the Vedas to maintain and perpetuate a well functioning society with virtuous morals and ideals recommend that the administrative authorities within reasonable time (without delays) should severely punish the people responsible for criminal deeds. Moreover, those persons who due to their selfish interests and/or false pride disobey societal rules (which are for the welfare of all) and commit crimes, they should be punished in open arenas in front of general public to discourage them from behaving similarly. According to one of the Vedic scriptures named Manu Smriti, criminals who perform violent crimes should without delay be executed either by hanging, burning by being made to lie on red hot iron bed, or be devoured by hungry animals. The recommended punishment were severe (compared to modem standards: see next paragraph) so that lacs (lac=100,000) of persons witnessing the punishment would have fear and not even in their mind think of doing similar crimes, instead they would be more inclined to follow dharma and be virtuous.

When in a society violent criminals do not get appropriately severe punishments, if there are marked delays in giving punishment (as it often happens in India and many other countries), or if the criminal escapes punishment on procedural/ technical legal grounds, then an average person in the society loses fear of and is more willing to doing crime. To establish a rule of peace and harmony in a society or a nation, the public needs to elect/select its presidents, prime ministers, members of assembly and other administrative heads who have brahma and/or shatra qualities as described in the first paragraph. The general public living in all places in the country including its villages, towns, and cities must exercise their civic duty by electing the very best available leaders with impeccable character and outstanding governing abilities.

The learned, cultured, and civic minded persons in the society must ever stay alert to what is happening in the governance of the society. They must be openly critical of any prevailing lies, deception, injustice exercised by the administrative authorities, but also should agree with the latter to promote truth, high moral ideals and justice. If members of the general public join forces together and understand their social rights and responsibilities as well as spend some-of their personal time, wealth, and intellectual abilities to oppose and fight any prevailing corruption and injustice in the society, and demand accountability from administrative authorities, then the miscreants would be severely discouraged from committing crimes.

Dear Supreme Father, please help us become, spiritually learned and physically strong so that we may soon succeed in uprooting the prevailing negative forces of corruption, violence etc. so commonly present these days in various societies and nations all over the world. Dear God this is our prayer to You.

To Be Continue....

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज IAS परीक्षा - 2019 एवं 2020
भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी ध्यान दें

आर्यसमाज के शिक्षण संस्थानों/गुरुकुलों/सेवाकेन्द्रों/बालवाड़ियों, डी.ए.वी. संस्थानों/ विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ऐसे प्रतिभावान छात्र/छात्राएं जो वर्ष 2019 में आयोजित होने वाली सिविल सर्विसिज एग्जामिनेशन में भाग लेना चाहते हैं, अर्थिक एवं मूलभूत आवश्यकताओं के अभाव के कारणों से परीक्षा तैयारियां नहीं कर पा रहे हैं उन सबके लिए आर्यसमाज की ओर से स्वर्णिम अवसर।

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की ओर से राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, आर्य शिक्षण संस्थानों में शिक्षा प्राप्त सुयोग्य पात्रों को आर्थिक सहयोग एवं परीक्षा तैयारियों के लिए प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करने की घोषणा की जाती है। योजना का लाभ प्राप्त करने के इच्छुक महानुभावों को एक लिखित/मौखिक एवं बौद्धिक परीक्षा पास करनी होगी। सफल परीक्षार्थियों में से प्रथम 40 अभ्यर्थियों को दिल्ली में आमन्त्रित करके, भोजन, आवास एवं तत्सम्बन्धी समस्त सुविधाएं निशुल्क प्रदान की जाएंगी तथा प्रशिक्षण की तैयारियां कराई जाएंगी। इस योजना का लाभ उठाने के इच्छुक विद्यार्थी/परीक्षार्थी अपने शैक्षिक प्रमाण पत्रों, वित्तीय स्थिति के विवरण तथा आवश्यक कागजातों की प्रति के साथ अपना आवेदन पत्र संस्थान की ईमेल आई.डी. dss.pratibha@gmail. com पर ईमेल करें। अधिक जानकारी के लिए मो. 9540002856 पर सम्पर्क करें। परीक्षा की तिथि शीघ्र ही घोषित की जाएगी। - ***व्यवस्थापक***

प्रेरक प्रसंग

युग कैसे बदला?

गतांक से आगे -

इनसे भी बढ़कर विचित्र स्थिति उन बारातियों की थी। वे कोई साधारण स्थिति के व्यक्ति न थे। आर्यसमाज के जाने-माने विद्वान्, नेता व साहित्यकार इनमें थे। इनमें से कुछ विभूतियाँ देशभर में विख्यात थीं। बारात को बैरंग लौटना पड़ता तो इनके पल्ले क्या रहता? इन सज्जनों के नाम भी हम यहाँ दे देते हैं-

कविरत्न प्रकाशचन्द्रजी, पण्डित जयदेवजी वेदभाष्याकार, प्रो. घीसूलालजी, डॉ. सूर्यदेवजी, पण्डित जियालालजी, पूज्य पण्डित ब्रह्मदत्तजी 'जिज्ञासु', पूज्य स्वामी लक्ष्मणानन्दजी महाराज, श्री राम सहाय जी (स्वामी श्री ओम्भक्तजी) आदि।

पाठक कन्या के पिता का नाम जानने को बड़े उत्सुक होंगे। उस धर्मवीर का नाम था रामनारायणजी रघुनाथ आर्य। ऐसे साहसी आर्यपुरुष को हम कदापि नहीं भूल सकते। बुराइयों से भिड़नेवाले प्रत्येक मनुष्य के लिए ऐसे आर्यवीर का सत्साहस एक उदाहरण है। भले ही वह कोई नेता और साधन-सम्पन्न व्यक्ति न थे, परन्तु निश्चय ही वे नींव का एक पत्थर थे। हम ऐसे धर्मवीरों के ऋण से अनृण नहीं हो सकते। आज जातपात के बन्धन की कड़ियाँ तोड़ना कोई कठिन कार्य नहीं है, परन्तु 1933 ई. में यह सुधारकार्य नहीं था, प्रत्युत क्रान्तिकारी कार्य था।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

दिल्ली के समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं के अधिकारियों की सेवा में

17वां आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह

माननीय महोदय, सादर नमस्ते !

प्रभु कृपा से आप सपरिवार स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

आपको विदित ही है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा समस्त आर्यसमाजों के सहयोग से प्रतिवर्ष होली के पावन पर्व की संध्या पर आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह का आयोजन किया जाता रहा है।

गत 16 वर्षों में आर्य परिवारों की सामूहिक एकता शक्ति एवं पारिवारिक सम्मिलन के प्रतीक के रूप में स्थापित हो चुके इस **होली मंगल मिलन समारोह** का आयोजन इस वर्ष **बुधवार 20 मार्च, 2019 को सायं 3 से 7:15 बजे तक रघुमल आर्य कन्या सी. सै0 स्कूल, राजाबाजार, स्टेट्स एम्पोरियम के पीछे, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में आयोजित किया जा रहा** है।

हमारा प्रयास रहा है कि आर्यसमाज की विचारधारा व्यक्ति ही नहीं अपितु परिवारों के साथ जुड़े। इस अवसर पर जहां बच्चों द्वारा विभिन्न सन्देशों को देते सांस्कृतिक कार्यक्रम, हास्य रंग, फूलों की होली प्रमुख आकर्षण होते हैं, वहां आर्यसमाज की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में नींव के पत्थरों के रूप में उपस्थित रहकर कार्य करने वाले आर्यजनों के जीवन पर आधारित नाटिकाओं का भी मंचन किया जाएगा।

आपको विदित ही है कि प्रति वर्ष होली के कार्यक्रम के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से अनेक योजनाओं की घोषणा की जाती रही है। सभा द्वारा चलाए जा रहे आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन, विशुद्धा सॉफ्टवेयर, घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ, मोबाइल ट्यून्स, सन्दर्भ पुस्तकालय, औचन्दी चिकित्सालय, गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम्, पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण, आदि योजनाओं का कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि इस वर्ष भी आर्यसमाज की उन्नति से सम्बन्धित परियोजनाओं के परिचय, कुछ नए कार्यों का शुभारम्भ किया जाएगा। इन योजनाओं के सफल निरन्तर संचालन एवं इस कार्यक्रम को सफल, सुन्दर, मनमोहक एवं रंगारंग बनाने के लिए सभा आपके सहयोग की अपेक्षा करती है। आपसे निवेदन है कि :-

1. साप्ताहिक सत्संग में सभी सदस्यों को इसकी सूचना दें तथा उन्हें अपने परिवार सहित कार्यक्रम में भाग लेने की प्रेरणा करें। कार्यक्रमों में हमारे परिवारों की युवा पीढ़ी सम्मिलित नहीं हो पाती, इसके लिए हमारा प्रयास होना चाहिए कि अपने-अपने परिवार के सभी आयु वर्ग के छोटे तथा बड़े सदस्यों को अवश्य लाएं।

अ) अपने सदस्यों के विवाहित पुत्रों को पुत्रवधुओं सहित तथा विवाहित पुत्रियों को परिवार सहित अवश्य आमन्त्रित करें। यदि आवश्यक समझें तो केवल पते हमें भेज दें उन्हें निमन्त्रण पत्र भेजे जाएंगे। आप उनके पते हमें aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भी भेज सकते हैं।

2. कार्यक्रम ठीक 3.15 बजे आरम्भ होगा। आप प्रयास करें कि सभी सदस्यगण ठीक समय पर पहुंच जाएं तथा कार्यक्रम इस तरह बनाएं कि समापन तक आप वहां रहकर कार्यक्रम का आनन्द लें।

3. अपने मान्य सदस्यों को सूचित करें कि कार्यक्रम में भोजन की पर्याप्त व्यवस्था होगी। कृपया संयम बनाए रखें, क्योंकि संयम के अभाव में बनाई गई बड़ी से बड़ी व्यवस्थाएं भी टूट जाती हैं। यह कार्य अति आवश्यक है। अत: कृपया इस सूचना को विशेष रूप से अवश्य दे देवें।

इस वर्ष विशेष रूप से होली के पण्डाल में निम्न कार्यों की विशेष व्यवस्था होगी, आप सभी इसका लाभ उठाएं :-

★ **आर्य परिवारों के विवाह योग्य युवक-युवतियों का पंजीकरण :** समारोह में **23वें आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन** एवं

- जारी पृष्ठ 7 पर

शोक समाचार

श्री राम नारायण सिंघल जी का निधन

आर्यसमाज जी.टी.रोड़ मोदी नगर, जिला गाजियाबाद के पूर्व प्रधान एवं अन्य अनेक पदों में अपनी सेवाएं देने वाले श्री राम नारायण सिंघल जी का 26 फरवरी, 2019 को लगभग 87 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 10 मार्च, 2019 को श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर (मोदी मन्दिर) में आयोजित हुई। जिसमें जिले की अनेक आर्यसमाजों के सदस्यों एवं अधिकारियों ने उपस्थित होकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। श्री सिंघल जी गुरुकुल प्रभात आश्रम के सम्मानित सदस्य एवं अनेक विद्यालयों और संस्थाओं के सम्मानित पदाधिकारी भी रहे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

प्रथम पृष्ठ का शेष

मेरे खून में है। आप जब चाहे, जैसा चाहें मुझे आदेश दे सकते हैं।

उन्होंने संसद में प्रस्तुत होने वाले दूसरे प्राइवेट बिल के बारे में बताया कि उन्होंने राष्ट्रगान 'जन-गण-मन' सभी गाएं और इसका पालन सभी को करना चाहिए।

इस अवसर पर भजनोपदेशक श्री अंकित उपाध्याय जी एवं टीम तथा अमृतसर से पधारे श्री दिनेश पथिक जी ने महर्षि दयानन्द जी एवं देश के वीर सैनिकों का स्मरण करते हुए भक्ति एवं देशभक्ति गीतों से समां बांध दिया।

इस अवसर पर पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र के वरिष्ठ आर्य कार्यकर्ताओं एवं सहयोगियों का सर्वश्री सोमदत्त महाजन, वेद प्रकाश ओबरॉय, भूषणलाल पारासर, सरदार सतपाल सिंह, एच.एल. मल्होत्रा, सुश्री मेधा आर्या को शॉल, माला, पीतवस्त्र एवं सम्मान पत्र भेंट करके सम्मानित किया गया। इसके साथ ही आर्यसमाज के प्रधान श्री शिव कुमार मदान, मन्त्री श्री रमेशचन्द्र आर्य एवं कोषाध्यक्ष श्री भूपसिंह सैनी का भी सम्मान किया गया। स्वादिष्ट भोजन के साथ पश्चिमी दिल्ली का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पूर्वी दिल्ली में महर्षि दयानंद गौ संवर्धन केंद्र गाजीपुर दिल्ली के प्रांगण में 1 मार्च, 2019 को महर्षि दयानंद सरस्वती जी का 195 वां जन्मोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर दिल्ली की समस्त आर्य समाजों से वहां के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्यों सहित आर्य शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थी और अध्यापक आदि हजारों की संख्या में आर्य जन सम्मलित हुए। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य नरेंद्र मैत्रेय जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ। यज्ञ में यजमान बनने वालों में गौभक्त जयनारायण अग्रवाल के साथ अनेक अन्य गणमान्य लोगों ने भाग लिया। यज्ञोपरान्त श्री दिनेश पथिक जी ने अपने सारगर्भित भजनों में महर्षि दयानंद के उपकारों और राष्ट्र भक्ति के संदेशों की प्रेरणा देते हुए सबको भावविभोर कर दिया।

महर्षि दयानंद सरस्वती की संपूर्ण शिक्षाएं और उनके जीवन के आदर्श राष्ट्र निर्माण एवं मानव समाज को सुदिशा प्रदान करने वाले हैं। एक तरफ महर्षि ने भारत की आजादी के लिए वैचारिक क्रांति का सूत्रपात करके अविस्मरणीय योगदान दिया, नारी शिक्षा, विधवा विवाह, यज्ञ, योग, स्वाध्याय और वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार किया, वहीं दूसरी और उन्होंने जातिवाद, छूआ-छूत, ढोंग-पाखंड, जादू-टोने, बाल विवाह, सती प्रथा आदि कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकने का अभियान चलाया। महर्षि के दिखाए रास्ते पर ही आर्य समाज आगे बढ़ रहा है। आज के कार्यक्रम में आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासी, आचार्य विद्वानों और आर्य नेताओं ने अपने उदगार प्रस्तुत करते हुए महर्षि दयानंद के जन्मोत्सव की सभी देशवासियों को बधाई दी और महर्षि के संदेशों से मानव समाज को अवगत कराया।

इस अवसर पर कैबिनेट राज्य मंत्री डा. सत्यपाल सिंह ने कहा- महर्षि दयानंद ने विश्व को नई दिशा प्रदान की है, गौसेवा की शिक्षा महर्षि की प्रमुख शिक्षाओं में से एक है।

हरियाण के पूर्व कृषिमंत्री बच्चन सिंह आर्य ने कहा- महर्षि की शिक्षाओं पर चलकर ही आर्य समाज मानव सेवा के क्षेत्र में अग्रणी है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री विनय आर्य ने कहा-महर्षि दयानंद जी गौसेवा के प्रबल समर्थक थे, उन्होंने रेवाडी में सर्वप्रथम गौशाला स्थापित की तथा आर्यों को वैदिक संस्कृति की रक्षा की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर पदमभूषण महाशय धर्मपाल जी, गौभक्त शिरोमणि जयनारायण अग्रवाल जी, पृथ्वीपाल जी, सुबोध कुमार जी, पुष्पेन्द्र जी, विनय आर्य जी का शाल व स्मृति चिन्ह देकर सार्वजनिक अभिनंदन किया गया। आर्यनेता धर्मपाल आर्य जी, सुरेंद्र रैली जी, महीपाल आर्य जी, और अशोक गुप्ता जी ने महर्षि दयानंद जी की शिक्षाओं को जन जन तक पहुंचाने की प्रेरणा प्रदान की। महर्षि दयानंद जी की जयंती पर पाकिस्तान द्वारा विंग कमांडर अभिनंदन वर्तमान को छोड़े जाने पर आर्य समाज की संस्थाओं द्वारा स्वागत किया।

पृष्ठ 5 का शेष

सम्मानित किया गया। विशेष रूप से श्री देवेंद्र आर्य जी रानी बाग के सेवा कार्यों की प्रशंसा करते हुए उनके समस्त परिवार को स्मृति चिह्न भेंट किया गया। श्री नितिञ्जय चौधरी को आर्य अनाथालय पटौदी हाऊस के सफल संचालन हेतु सम्मानित किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने उपस्थित आर्यजनों को ऋषि बोधदिवस की बधाई देते हुए कहा कि यह पुलवामा से लेकर सारे आतंकवाद के समाचार जो हम सुन रहे हैं और जो देख रहे हैं, यह लड़ाई केवल आतंकवाद की लड़ाई नहीं है, बल्कि यह एक वैचारिक लड़ाई है। यह जंग वही जीतेगा जो जागृत होगा। विचारों से, मन से और बुद्धि से जागने पर ही हमारी कौम जीवित रह पाएगी। इसलिए स्वयं जागो और सबको जगाओ।

आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री सतीश चड्डा जी ने मंच का सुंदर संचालन किया और बीच-बीच में आर्यजनों को बोध दिवस पर बधाई दी तथा सेवा के संकल्प धारण करने के लिए प्रेरित किया। सभी दान दाताओं ने श्रद्धा भाव से यथाशक्ति सात्विक दान दिया हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि उनके सात्विक धन में वृद्धि हो और वह हमें शुभ कार्यों हेतु प्रोत्साहित करते रहें। जिन महानुभावों की सेवाओं से यह कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ उनमें विशेषकर श्री हरिओम बंसल, श्री एस. पी. सिंह, श्री नीरज आर्य, श्री जय प्रकाश शास्त्री, श्री अशोक कुमार, श्रीमती वीना आर्या, श्रीमती नीरज मैदीरत्ता, श्री मदनलाल, श्री संजय, आर्य वीर दल के श्री रोहतास, श्री धर्मवीर व पंजाबी बाग के आर्यवीरों का हार्दिक धन्यवाद करते हैं। श्री नरेन्द्र गांधी जी की ओर से पेयजल व्यवस्था की गई, उनका भी धन्यवाद। विभिन्न आर्यसमाजों के अधिकारी व सदस्यों ने आकर धर्म लाभ प्राप्त किया तथा हमें प्रोत्साहित भी किया, उनका हार्दिक धन्यवाद।

- सतीश चड्डा, महामन्त्री

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 4 मार्च, 2019 से रविवार 10 मार्च, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 7-8 मार्च, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 6 मार्च, 2019

पृष्ठ 7 का शेष

आर्यसमाज के पोर्टल पर संचालित वैवाहिक सेवा के लिए पंजीकरण किए जाएंगे। पंजीकरण के लिए समारोह स्थल पर वैवाहिक पंजीकरण स्टाल पर सम्पर्क करें।

★ **सम्मान :** प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी समारोह में पधारने वाले **सबसे कम आयु** के बच्चे, **सबसे अधिक आयु** के बुजुर्ग आर्य महानुभाव, **सबसे नव विवाहित जोड़े** तथा **एक ही वंशावली से सबसे अधिक संख्या में पधारे परिवार** का परिचय एवं सम्मान किया जाएगा। इच्छुक महानुभाव अपने नाम समारोह स्थल पर स्थित कार्यालय में सभा मन्त्री श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता जी को सायंकाल 5 बजे से पूर्व पहुंचा देवें।

★ **आर्यसन्देश की आजीवन सदस्यता :** साप्ताहिक आर्य सन्देश की आजीवन (10 वर्षीय) सदस्यता 1000/- के स्थान पर 900/- रुपये में दी जाएगी। सदस्यता पाने के लिए आयोजन स्थल पर सभा के स्टाल पर सम्पर्क करें।

★ अल्पाहार (स्नैक्स) आदि बिक्री हेतु स्टाल एवं बच्चों के लिए झूले तथा मनोरंजन की व्यवस्था।

★ **स्टाल पर उपलब्ध सामग्री :-** आयोजन स्थल पर सभा के स्टाल पर वेदों के सैट, सत्यार्थ प्रकाश, बच्चों के लिए कॉमिक्स, हवन सामग्री, होली के गीत की सीडी, ओम स्टीकर, शगुन लिफाफे, वैदिक विनय, नव सम्वत्सर कार्ड आदि वस्तुएं उपलब्ध होगी। इसी के साथ आम व्यक्ति तक आर्यसमाज के मन्तव्य तथा उद्देश्यों को पहुंचाने के लिए विशेष रूप से प्रकाशित पत्रक भी उपलब्ध होंगे। समस्त महानुभाव अधिकाधिक संख्या में खरीदकर प्रचार कार्य को बढ़ाने में सहयोगी बनें।

★ **पोर्टल एवं मोबाइल एप्प :** आर्यसमाज के वैब पोर्टल www.thearyasamaj.org जिस पर आर्यसमाज की समस्त पत्रिकाएं, पुस्तकें, सूचनाएं, आयोजन आदि प्रदर्शित किए जाते हैं। आप स्वयं भी अपनी आर्यसमाज/संस्था के आयोजनों की रिपोर्ट, सूचनाएं, चित्रमालाएं भी इस पर अपलोड कर सकते हैं। इस वर्ष कुछ नए मोबाइल एप्प Prayer Mantra, Arya Locator, Satyarth Prakash Audio, Arya Samaj Bhajnavali, Havan, Arya Namawali, Arya Samaj TV (YouTube) , आर्यसन्देश टी.वी., रंग दे बसन्ती यू-ट्यूब चैनल आदि लॉंच किए गए हैं आप अपने मोबाइल में डाउनलॉड करा सकते हैं।

★ **आपका सहयोग :** आर्यसमाज के प्रचार कार्यों के लिए निरन्तर बनाई जा रही योजनाओं में अपने अमूल्य सुझाव अवश्य देवें। आप अपने सुझाव आयोजन स्थल पर स्थापित कार्यालय में जमा करा सकते हैं। योजनाओं के निरन्तर संचालन के लिए आपका आर्थिक सहयोग सादर अपेक्षित है।

कृपया अपनी सहयोग राशि नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम सभा कार्यालय - **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजकर सहयोग प्रदान करें।

सभा को दिया गया दान आयकर की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। धन्यवाद सहित। - ***विनय आर्य,*** *महामन्त्री, मो0: 9958174441*

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित

महर्षि दयानन्दकृत

सत्यार्थ प्रकाश

उर्दू भाषा में अनुवाद)

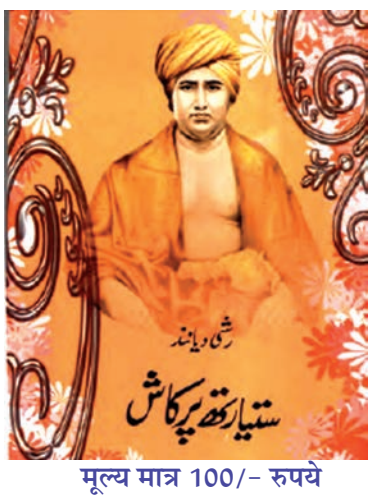

मूल्य मात्र 100/- रुपये

श्री बलदेव राज महाजन जी

(आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज)

के विशेष सहयोग से

केवल मात्र 70/- में

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्र. सभा, मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह